सत्य... सत्य ही रहता है

समाज किसी को भी तुरंत अपनाने को राज़ी नहीं होता। हमेशा भावनात्मक बहाव में या अपनी शक्ति की कमी के कारण या धर्म के बहाव में बिना कुछ सोचे-समझे विरोध करना, ये हमारी नियति है। और इसी नियति की वजह से हम दुःखी हैं। अगर ये दुनिया में कहा गया है कि परमात्मा ने अपने जैसा इंसान बनाया, तो कुछ तो इसमें सच्चाई होगी। वैसे इंसान दिखने भी तो चाहिए। वैसे दिखाई नहीं दे रहे हैं। क्योंकि जब ऐसे इंसान होंगे, तो हमारे जैसे नहीं होंगे। इसलिए सत्य तो सत्य है। उसमें कुछ भी मिलावट नहीं हो सकती। सबको पता है, पत्थर में भगवान नहीं होते। सबको पता है भगवान इधर-उधर नहीं हो सकते। फिर भी कोई भी इस चक्रव्यूह से बाहर निकले तब तो समझे ना!

मूर्ति पूजक बहुत हुए इस संसार में, और उनकी भक्ति भी बहुत प्रगाढ़ थी। लेकिन वे सबके लिए हर

जगह प्रसिद्ध नहीं हुए। कारण, सही रूप से उन्होंने भगवान का सिमरण नहीं किया। कोई आंचलिक स्तर पर, कोई प्रादेशिक स्तर पर, तो कोई राष्ट्रीय स्तर पर ज़रूर प्रसिद्ध हुए होंगे, लेकिन उनका उदाहरण भक्ति हेतु थोड़ा बहुत दिया जाता है, उन्हें पढ़ाया नहीं जाता। पढ़ा या पढ़ाया उनको जाता है, जो हमेशा सत्य होता है, सत्यता की बात करता है, सत्यता के साथ रहता है और सत्य को जीता है। अर्थात् सत्य शुरू में ज़रूर स्वीकार्य नहीं होता लोगों को, लेकिन बाद में उनके गुण सभी को बहुत आकर्षित करते हैं। इसीलिए जितने भी वास्तविक संत-महात्मायें हुए, उन्हीं को आज पाठयक्रमों में शामिल कर पढ़ाया जाता है, औरों को नहीं। सत्य को पहचानना पहली वरियता, उसपर अमल करना दूसरी, और यही इन संतों ने किया। आज भी कुछ जागृत लोग हैं, जो इन आडम्बरों का विरोध करते तो हैं, लेकिन अपने निजी स्वार्थ के लिए।

सत्य क्या है? सत्य की परिभाषा क्या है? सत्य जो सर्व स्वीकार्य हो, मान्य हो वो होता है ना! तो आप अपने से शुरुआत करें, देखें कि क्या आप सभी को मान्य हैं, स्वीकार्य हैं? हमारे हिसाब से तो नहीं। क्योंकि सभी को आपसे कुछ न कुछ शिकायत ज़रूर है। इसका मतलब कुछ झूठ है जो हमारे साथ जुड़ा हुआ है। तभी तो लोग हमसे संतुष्ट हैं। सब लोग सत्य सुनना चाहते हैं, सत्य के साथ रहना चाहते हैं, सत्य बोलने के लिए कहते हैं, लेकिन आस-पास का माहौल देखते हुए उसमें ढलने के कारण उसको स्वीकार करते हुए कह देते हैं कि आज तो झूठ का बोलबाला है, सच्चे का मुँह काला है। इसका मतलब आज जो सच बोले वो इस दुनिया से कहीं और डोले। लोग उसे अपनी बिरादरी का नहीं मानते। कहते हैं ये तो इस दुनिया में रहने लायक नहीं हैं, ये तो राजा हरीशचन्द्र है। इसका मतलब आज भी राजा हरीशचन्द्र सत्य का एक मिसाल है, जो सबके लिए एक उदाहरण है। इसलिए सच क्या है? क्यों सबको इतना आकर्षित करता है? आप भी सोचो, हम भी सोचेंगे।

उपरोक्त बातों से आपको ये नहीं लगता कि जिन्होंने अपने ऊपर काम किया, सत्य को जाना, उस परम सत्य को पहचाना, अपने दिल की सुनी, समाज, मान्यता, आडम्बर का पुरजोर विरोध किया, लोगों ने उन्हीं को स्वीकार किया, चाहे वो किसी भी धर्म, जाति का हो। आप हमारे सामने बैठकर परम सत्य के बारे में बहस को लेकर विरोध ज़रूर कर सकते हैं, लेकिन आप इन सब आत्माओं को स्वीकार तो करते हैं ना! ये है सत्य और उससे जुड़ी हुई एक अद्भुत, अकल्पनीय मान्यता, जिसे सब स्वीकार करेंगे ही करेंगे। और यही परमात्मा चाहता है कि बहुत कम लोग मुझे और तूझे समझ पायेंगे। क्योंकि सत्य की राह पर चलना बहुत आसान होता है, क्योंकि इस राह पर भीड़ कम होती है। आज हम भीड़ में भेड़ चाल चल रहे हैं, क्योंकि हम डर रहे हैं। अरे भाई! कुछ अलग दिखना चाहते हो और देखना चाहते हो, तो कुछ अलग हटकर, सत्य को पहचानकर उसे अपनाना पड़ेगा।

बाप के प्यार का रिटर्न है... स्वयं को टर्न करना

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

देखो, बाबा का हम बच्चों से कितना प्यार है। बच्चों की ज़रा भी कमी देख नहीं सकता है। जिससे भी प्यार होता है, उसकी छोटी-भी कोई ऐसी-वैसी बात सुनेंगे तो बुरा लगेगा। आपकी नहीं है, है दूसरे की लेकिन ऐसी बुरी लगेगी, जैसे मेरी है। तो बाबा का तो आत्मिक प्यार है, परमात्म प्यार है। तो बाबा ने यह विशेष प्रोग्राम बनाया कि जो भी कमज़ोरियां हैं, कमियां हैं क्योंकि यह अन्तिम काल है और सबका अन्तिम काल आना ही है। फिक्स नहीं है, कभी भी किसी के पास आ सकता है। मम्मा का बहुत अच्छा एक स्लोगन था- "हर घड़ी को अन्तिम घड़ी समझो।" तो अन्तिम घड़ी में और कुछ याद नहीं आवे, कोई देवता याद आवे, अच्छी बातें याद आवें क्योंकि अन्त मति सो गति होती है ना! एवररेडी रहेंगे तो अन्त सुहानी होगी।

बाबा की ऐसी एलर्ट रहने की नेचर थी तो बच्चों को भी एलर्ट रखता था। तो हमें भी अभी ऐसा एलर्ट रहना चाहिए क्योंकि बाबा को बिल्कुल सुस्ती अच्छी नहीं लगती थी। कैसा भी पेपर आवे, उसमें हम पास होकर दिखावें। करेंगे, देखेंगे... यह शब्द बाबा को बिल्कुल अच्छे नहीं लगते हैं। लेकिन अगर बाबा से प्यार है, वो तो सबका 100 परसेन्ट है, उसके लिए तो बाबा ने हमें सर्टीफिकेट दिया। बाकी और कोई सब्जेक्ट में ऐसी रिजल्ट नहीं है। बाबा से प्यार है तब तो मजबूरी से ही सही, चल रहे हैं। परन्तु प्यार का रिटर्न केवल इतना ही नहीं होगा। बाकी जो सब्जेक्ट रहे हुए हैं, उसमें भी समान तो बनना पड़ेगा ना!

बाबा कहते मुझे और कोई रिटर्न नहीं चाहिए, एक शब्द में तुम अपने को टर्न कर लो। टर्न और रिटर्न। इसमें फायदा तो हमको ही होगा, तब बाबा कहते अपने को टर्न करो, इसमें दूसरे को नहीं देखना होता है क्योंकि अपने को बचाने के लिए, अपनी गलती दूसरे के ऊपर रखेंगे। दूसरे को देख के करने से दूर की नज़र तेज हो जाती है। फिर दूसरे की गलती सहज दिखाई देती है तो कहते हैं ये तो यह भी करते हैं इसलिए सब चलता है, होता है। अब चलेगा तो सही क्योंकि सब नम्बरवार हैं,लेकिन मेरे को क्या देखना है? तो जो दूसरों को ज़्यादा देखते हैं, उन्हों के आधार पर जो अपनी गलती भी उनके ऊपर छोड़ने की कोशिश करते हैं, वो आलसी और अलबेले हो जाते हैं। "मैंने किया" अन्दर समझ रहे हैं लेकिन बाहर से सिद्ध जो करेंगे वो यह कहेंगे यह हुआ ना, यह किया ना... इसलिए हुआ। यही तो पेपर है ना, हमारे सामने छोटी-छोटी बातों के माध्यम से पेपर आते हैं। जहाँ भी जायेंगे, वहाँ यह पेपर आयेंगे ज़रूर, कोई न कोई रूप चेंज होकर। इसलिए खुद को बदलो, औरों को बदलो, इसके लिए बदलना है ज्ञान और योग के हिसाब से न कि सेन्टर के हिसाब से या साथी के हिसाब से। तो यह थोड़ी हिम्मत रखो। थोड़ी-सी बात हुई तो क्या करें, कैसे करें... वेस्ट थॉट शुरू होते हैं।

बाबा ने कहा किसकी फालतू बातें, गन्दी बातें सुनना यह भी वास्तव में पाप है क्योंकि हमने अपना टाइम तो वेस्ट किया। सुनने से कुछ न कुछ बात याद आती है इसलिए बाबा कहते युक्ति से अपने को टालने की कोशिश करो। अभी यह सब बातें भूल के सेकण्ड में अशरीरी हो जाने की प्रैक्टिस करो।

कर्म करते भी मेरी बुद्धि शुद्ध है, परमात्मा बाप से जुटी है तो मैं योगी हूँ...

राजयोगिनी दादी जानकी जी

प्रश्न : यदि कोई सेवा में बहुत बिज़ी है, योग के लिए समय नहीं मिलता- तो क्या वह कर्मातीत अवस्था तक पहुंच सकेगा?

दादी जी- मेरा अनुभव कहता है कि जिन कर्मबन्धनों में हम फंसे हैं, उन सबसे फ्री होने के लिए इतने ही श्रेष्ठ कर्म चाहिए। सिर्फ योग ही काम नहीं करता। योग भी तब लगेगा जब श्रेष्ठ कर्म होंगे। योग से हमारे पास्ट कर्मों का हिसाब-किताब भी चुक्तू तब होता है जब अभी श्रेष्ठ कर्म साथ-साथ हैं। योग से बुद्धि अशुद्ध से शुद्ध बनती है। आप निगेटिव छोड़ दो, साधारण व व्यर्थ संकल्प छोड़ दो, शुद्ध सकारात्मक संकल्प करो... इसके लिए टाइम की ज़रूरत नहीं है। कर्म करते भी मेरी बुद्धि शुद्ध है, परमात्मा बाप से जुटी हुई है तो मैं योगी हूँ। अगर मेरी बुद्धि शुद्ध नहीं है, किसी बात का असर है, कोई सोच-विचार व चिंतन है तो मैं योगी नहीं। इसलिए योग में श्रेष्ठ कर्म हमें बहुत मदद करते हैं। कई बार 18 घंटे सेवा करते भी यह फील नहीं होता कि सेवा के कारण मुझे आराम ही नहीं मिलता। सेवा तो मुझे दुआएं देती है। सेवा अगर मेरे जीवन में न होती तो हम ज़िंदा ही नहीं होते। ज़िंदा होते भी तो किस काम के! दूसरों को हमारे द्वारा बल मिले, शान्ति मिले। अगर मुझ आत्मा से अनेकों को सहयोग मिला तो वह सहयोग ही सिद्ध करता है कि हम योगी हैं। हम योग लगाते हैं बाबा से सहयोग लेने के लिए। योगी ही सबका सहयोगी बनता है। सेवा माना सहयोगी बनना, हर बात में हाथ बढ़ाना। बुद्धि की मदद करना, दिल से शुद्ध वायब्रेशन की स्नेह भरी मदद करना। यह योग-सहयोग एक होता जा रहा है। इतनी यज्ञ सेवा सबके सहयोग से हो रही है, किसमें कोई विशेषता है, किसमें कोई। ईश्वरीय परिवार का स्नेह और सहयोग भी हमको योगयुक्त बनाता है। तो हम कर्म और योग को अलग नहीं कर सकते। यज्ञ सेवा करना भी किसके भाग्य में हो। संगठन में रहना भी किसके भाग्य में हो। कभी अपनी जीवन साधारण नहीं समझो। बाबा ने मुझे भाग्य दिया है कर्म करने का। इससे बड़ा योग और क्या है। यह मेरे योग की, शुद्ध संकल्प की कमाल है। दिल सच्ची है तो आत्मा को जिस घड़ी, जिस सेवा की ज़रूरत है वह बाबा करा लेता है। सिर्फ हमें हाँ जी करना है। हम कभी यह कह नहीं सकते कि हमें योग लगाने का टाइम नहीं मिलता, जो सेवा मिलती है मैं उसमें खुश हूँ, बाबा का मेरे पर अधिकार है। मेरी पर्सनल उन्नति-मेरी सच्चाई से, सम्बन्ध से, बुद्धि कहाँ लीक न हो, गम्भीरता, सयानप मेरे पास हो, ईमानदारी मेरे पास हो, इसी से होगी। मैं सेवा छोड़कर योग में बैठ जाऊं, नहीं। मेरा दिल खाता है। जिस सेवा अर्थ आई हूँ, वह मुझे बजानी है। जिस घड़ी जो काम है वह ईमानदारी व सच्चाई से करना भी योग है। तो हर बात में सच्चा सहयोगी बनने वाला ही अपना सुंदर रिकॉर्ड बाबा के पास रखता है। बस बाबा मुझे और कुछ नहीं चाहिए, आपका सहयोग हो और जितना मुझ आत्मा से हो सकता है, श्रेष्ठ कर्म करता चलूँ- इससे कर्मातीत अवस्था बनी पड़ी है। कर्मातीत बनने वालों की भी लाइन लग जायेगी।

प्रश्न : पाप कर्म क्या है?

दादी जी- पाप वह है जहाँ कॉन्सेस खाता है। विवेक खाता है- वह नहीं करना चाहिए। पुण्य वह है जिसमें अपना कॉन्सेस माने कि यह काम ठीक हुआ। मन उल्टा-सीधा दोनों करता है। बुद्धि जानती है यह उल्टी बात है या सीधी बात है, तो भी संगदोष या पुराने संस्कारवश उल्टा कर लेती है। पीछे विवेक खाता है। विवेक किसी को भी छोड़ता नहीं है। बुद्धि प्रभाव में आई, संस्कारों के वश हुई, विवेक नहीं छोड़ता। जब एकांत में होगा, शान्त होगा तो विवेक अंदर मारता है। किसी ने बुरा नहीं किया होगा तो सीधा कहेगा मैंने नहीं किया, मेरा विवेक नहीं कहता। तो जिसमें अपना विवेक खाता है वह काम हमें नहीं करना है। जिस काम के लिए दिल मानती है वह करते चलो।

अपनी बैलेन्स सीट ऐसी बनाओ जो धर्मराज दिल से खातिरी करे

यह संगमयुग पुरुषोत्तम युग है, इसे चढ़ती कला का, वरदानी युग भी कहते हैं। इस युग में आप सबको समर्पित होने का भाग्य मिला है। यह भाग्य भी कोटो में कोई, कोई में भी कोई को मिलता है। तो हमें आप समर्पित पाण्डवों को देख बहुत-बहुत खुशी हो रही है। हम सबकी एक आश है कि हम बाबा को प्रत्यक्ष करें, यह आश अभी तक पूरी नहीं हो रही है, क्यों? हमारी आश है कि हमारे यज्ञ के जो सभी पाण्डव हैं, वह ऐसा करके दिखावे जो हरेक कहे कि मेरी स्थिति बाबा के ज्ञान और योग के अनुसार निर्विघ्न है अर्थात् हम बाबा आपके पक्के 'मायाजीत बच्चे' हैं। माया कमज़ोर करती है वह तो बहुत सुना है। लेकिन अभी हम मायाजीत हैं, ऐसा ठप्पा सभी का लगना चाहिए। ऐसी यहाँ भट्ठी की प्रतिज्ञा का प्रत्यक्ष प्रमाण बाबा को मिलना चाहिए। पाण्डव माना ही जिन्होंने प्रीत बुद्धि का प्रत्यक्षफल दिखाया। भल उनके सामने कितनी भी परीक्षायें आई, जंगल में भी जाना पड़ा तो भी विजयी बनकर दिखाया। ऐसे आप पाण्डव इस पाँच दिन के अन्दर ऐसी एकता की नींव लगाकर जाओ जो आप यहाँ से जहाँ भी जाओ तो सब देखकर कहें कि यह जादू की नगरी से पूरा ही बदलकर आये हैं। जो कुछ भी छोटी-मोटी, तेरी-मेरी बातें हों... सब

बाबा कहते हैं कि सर्वंश त्यागी बनो, वैरागी बनो। समर्पित का अर्थ ही है सर्वंश त्यागी। समर्पित माना ही पुरानी दुनिया से वैरागी और पक्के सन्यासी, पक्के त्यागी, पक्के तपस्वी और सच्चे-सच्चे माला के मणके बनकर जायें।

राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी

खत्म करके हम बाबा के सच्चे बच्चे, सच्ची गोदी में बैठकर चलेंगे- ऐसी यहाँ भट्ठी करके जाना। योग का अभ्यास तो करना ही है, साथ-साथ इस भट्ठी में कुछ नवीनता करके जाना है। जैसे बाबा कहते हैं कि सर्वंश त्यागी बनो, वैरागी बनो। समर्पित का अर्थ ही है सर्वंश त्यागी। समर्पित माना ही पुरानी दुनिया से वैरागी और पक्के सन्यासी, पक्के त्यागी, पक्के तपस्वी और सच्चे-सच्चे माला के मणके बनकर जायें। हम 'विजयी माला' के विजयी रत्न हैं, विजयी रत्न थे इसलिए अभी 'विजयी रत्न' बनके ही जाना है क्योंकि बार-बार दिल में यह ज़रूर आता कि अब घर जाना है या आप समझते हैं हम तो अभी युवा हैं, हमें तो अभी इस दुनिया में रहना है? युवा, बूढ़े सब समझते हैं हमें घर जाना है। कभी-कभी युवा समझते हैं हम तो अभी युवा हैं लेकिन बाबा कहते आप सब वानप्रस्थी हो, वानप्रस्थी माना युवा नहीं। वानप्रस्थियों की बुद्धि में रहता है कि कभी भी पंछी उड़ जाए, हम तैयार हैं।

तो हमारी आश है कि एक-एक पाण्डव ऐसा अपना बैलेन्स सीट क्लीयर करो,जो धर्मराज भी फूलों से स्वागत करके, सलाम करके वतन में भेजे। सभी बाबा के ज्ञानी तू आत्मा बच्चे अपना बैलेन्स सीट ऐसा बनाओ जो धर्मराज दिल से खातिरी करे। यह नहीं कि देख तुमने यह गलत किया, यह तू भोग- तो यह सब यहाँ खत्म करके जाओ। क्या यह पॉसिबल है? हमारा रिमार्क है कि अन्त में बाबा बाहें पसार कर कहे आओ बच्चे आओ, ऐसे गले लगाकर वतन में भेज दे, ऐसी स्थिति बनानी है। दिल कहे 100प्रतिशत हमारा यह रिकॉर्ड हो। बाबा की श्रीमत अनुसार हमारा मन-वचन-कर्म हो। बाबा हमें सर्टीफिकेट दे कि यह संस्कारों से, संकल्पों से, दृष्टि, वृत्ति सभी से पास विद ऑनर है। ऐसी कमाल करो तब कहेंगे समर्पित।